Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-V May 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में नारी

प्रा. डॉ. लीला कर्वा
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म १८८६ ई. में उत्तर प्रदेश के जिला झाँसी के चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था । उनके पिता सेठ रामचरण राम के परम भक्त थे, अतः मैथिलीशरण के मन में भी बचपन से ही भक्ति के संस्कार पड़ गये । गुप्त जी की रचनाओं में भक्ति के साथ ही राष्ट्रीयता का प्रवाह बहता है । भक्ति के क्षेत्र में वे भगवान राम से और राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी से अधिक प्रभावित थे । राष्ट्र के प्रति उनके अनन्य प्रेम के कारण ही उनको राष्ट्रकवि की उपाधि प्राप्त हुई । वे राज्यसभा के सांसद थे ।

हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्तजी का प्रमुख स्थान है । उनकी सम्पुर्ण रचनाओं का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है ।

१. महाकाव्य - साकेत और जयभारत
२. खण्डकाव्य - रंग मे भंग, जयद्रथ वध, तिलोत्तमा चन्द्रहास शकुन्तला, वनवैभव, बकसंहार सैरन्ध्री पंचवटी विकटभट, सिध्दराज नहप, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया, रत्नावली.
३. मुक्तक काव्य - पद्य प्रबन्ध, भारत भारती, वैतालिक, स्वदेश संगीत झंकार, मंगलपट, विश्व वेदना और अच्छवात
४. उद्‌बोधनात्मक काव्य - किसान पत्रावली हिन्दु, शक्ति, गुरुकुल गुरुतेगबहादुर, द्वापर, काबा और कर्बला, अजित, अर्जत और विसर्जन, अंजलि और अर्ध्य, पृथिवि पुत्र प्रदक्षिणा, युध्द, भूमि भाग और राजा प्रजा ।
५. चम्पु - यशोधरा
६. रुपक - अनध
७. नाट्य गीति - लीला

गुप्तजी के काव्य में पौराणिक कथाओं और मध्ययुगिन इतिहास का आधार लिया गया है । इनके काव्य में राष्ट्रीयता का संदेश है साथ ही नारी के त्यागमयी आदर्श रुप का चित्रण उन्होंने अपने काव्य में किया है ।

वनवासिनी सीता अपने पति के साथ वनवास में भी कितनी खुश थी इसका बहुतही सुंदर वर्णन गुप्तजी ने किया है ।

निज सौंध सदन में उरज पिता ने छाया
मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया
सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर हैं
देते आकर आशीष हमें मुनिवर है
धन तुच्छ यहाँ यद्यपि असंख्य आकार

पाणी पिते मृग सिंह एक तट पर है
सीता रानी को यहाँ लाभ ही लाया
मेरी कुटिया में राज भवन मन भाया.

सीता अपने पति के साथ इस गृहस्थ जीवन में सुख की अनुभूति प्राप्त करती है। गुप्तजी ने सीता के रुप में भारतीय नारी के इस आदर्श रुप को स्थापित किया है । भारतीय नारी अपने पति के साथ किसी भी परिस्थिती में अपने आप को ढाल देती है और उनका पूरा साथ निभाती है । इसी कारण सीता को वनवास की कुटिया भी राजभवन प्रतित होता है ।

एक ओर सीता का यह रुप तो दुसरी ओर लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की विरह वेदना का रुप गुप्तजी ने अपने महाकाव्य साकेत में चित्रित किया है ।

साकेत की कथा लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की जीवन कथा है । राम के साथ लक्ष्मण के वन चले जाने पर उर्मिला को १४ वर्ष तक जो विरह वेदना सहनी पड़ी उसका चित्रण इस महाकाव्य में किया गया है ।

यही आता है इस मन में
छोड़ धाम-धन जाकर मैं भी रहुँ उसी वन में
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालुँ रहूँ निकट भी दूर
व्यथा रहे, पर साथ-साथ ही समाधान भरपूर
हर्ष डुबा हो रोदन में यही आता है इस मन में

उर्मिला का यह रुप एक कर्तव्य-परायण सती साध्वी का रुप है । वो अपने पति को देखकर समाधान पाना चाहती है । अपने प्रिय के व्रत में विघ्न नहीं डालना चाहती। पर विरह वियोग में तड़पती उसकी वेदना इस तरह उमड़ आती है.

दुख भी मुझसे विमुख हो करे न कही प्रयाण,
आज उन्ही में तो तनिक अटके हैं ये प्राण ।
उनकी विरह वेदना के कारण ही मैं जीवित हूँ ।
इसलिए अपने प्रिय के विरह के प्रति भी उसे मोह है ।

इस तरह अत्यंत संयत और मर्यादापूर्ण चित्रण गुप्तजी करते हैं । इसी भाँति कैकयी का चरित्र पर लगे कलंक को दूर करने का सफल प्रयास उन्होंने किया है ।

इसी काव्य में शुर्पनखा जैसी नारी का मोह वासना पीड़ित अनैतिक है । इसको राम के मुख से कहलाया है -

हा नारी ! किस भ्रम में है तू, प्रेम नहीं, यह तो है मोह
आत्मा का विश्वास नहीं यह, है तेरे मन का विद्रोह
विष से भरी वासना है यह, सुधापूर्ण वह प्रीति नहीं ।
रीति नहीं, अनरीति और यह अति अनीति है, नीति नहीं ।

यशोधरा गुप्तजी की लोकप्रिय रचना है । इसमें गौतम बुध्द और यशोधरा की कथा है । यशोधरा के मार्मिक भावों का चित्रण इस काव्य में किया है । नारी के दो रुप इसमें प्रमुख हैं । पत्नी और माँ । इन दोनो रुपों को बहुत ही प्रभावी रुप से चित्रीत किया गया है ।

यशोधरा एक पत्नी के रुप में अपने पती के कार्य में बाधा बनना नहीं चाहती, जैसे अनेक राजस्त्रियाँ अपने राजधर्म को निभाते हुए उनके युध्दस्थल पर हँसते हँसते आरती उतारते हुए विदा करती है वैसे मैं

भी उनको उनके इस कार्य के लिए जाने देती पर कम से कम पत्नी के नाते उनको मुझसे एक बार बात तो करनी चाहिए थी

सखी वे मुझसे कहकर जाते
तो क्या अपने पथ में बाधा पाते ?
यशोधरा के पत्नीत्व का गर्व इन पंक्तियों में देखिए
चाहें तुम सम्बन्ध न मानो
स्वामी ! किन्तु न टूटेंगे ये तुम कितना भी तानो
पहले हो तुम यशोधरा के, पीछे होंगे किसी परा के
मिथ्या भय है जन्म जरा के, इन्हें न उनमें जानो

एक पत्नी का यह विश्वास से परिपूर्ण रुप तो दुसरी ओर हम माँ की भाँती अपने बेटे के लिए व्याकुल भयभीत मन यशोधरा का गुप्तजीने अत्यंत स्वाभाविक रुप में प्रकट किया है ।

ठहर बाल गोपाल कन्हैया
राहुल राजा भैया
कैसे धाऊँ पाऊँ तुझको, हार गई मैं दैया
सद्य दूध प्रस्तुत है बेटा, दुग्ध फेन-सी शैया ।

यशोधरा की विरह वेदना के साथ ही राहुल के प्रति माँ के वात्सल्य का सजिव चित्रण है ।

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्तजी ने **नारी जीवन** के त्यागमयी आदर्श रुप को अपने काव्य में प्रस्तुत किया है ।

संदर्भ ग्रंथः

१ हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास — राजनाथ शर्मा